488 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 41
नवम् अंक
अप्रैल 2019

इस अंक में...

10 परखो, परखना है जरूरी
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
17 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
32 नवीनतम सामान्य ज्ञान
38 राज्य समाचार
48 खेलकूद
50 रोजगार समाचार
52 बीपीएससी 60-62वीं के कुछ सफल उम्मीदवारों से बातचीत का सारांश
60 कॅरियर लेख : सिविल सेवा (प्रारम्भिक) परीक्षा–2019 : आपका आत्मविश्वास आपको आगे बढ़ाने में सहायक होगा
62 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
66 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
69 स्मरणीय तथ्य
72 विश्व परिदृश्य
77 फोकस
(1) सम्पत्ति की बढ़ती असमानताएं : ऑक्सफाम सर्वेक्षण–2019
80 (2) भारत में न्यूनतम मजदूरी *बनाम* जीवन निर्वाह मजदूरी
83 भारतीय चुनाव प्रणाली : सुधार की आवश्यकता
86 राजनीतिक लेख–लोक सभा निर्वाचन : प्रक्रिया एवं तथ्य
89 सामयिक लेख–लोकतन्त्र में नोटा की सार्थकता
91 समसामयिक कूटनीतिक लेख–उपयोगिता की कसौटी पर भारत-अमरीका '2+2' स्तरीय रणनीतिक वार्ता
93 समसामयिक विधायी लेख–आधार पर सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला
96 मूल्यांकन लेख–असमानता में कमी लाने के प्रति वचनबद्धता निर्देशांक 2018 : भारत 147 वें स्थान पर
99 विधि लेख–संविधान की कुछ विशेष व्यवस्थाएँ
101 पर्यावरण लेख–पर्यावरण एवं गिरते नैतिक मानदण्ड
103 चिकित्सा लेख–आयुष्मान भारत : एक समग्र विश्लेषण
106 कृषि लेख–कृषि में एजोला उत्पादन और उसकी उपयोगिता
108 प्रौद्योगिकी लेख–ड्रोन को मिला नया आसमान
110 ऊर्जा लेख–पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
112 अन्तरिक्ष लेख–ग्लोबल सैटेलाइट मार्केट में भारत की बढ़ती धमक
113 सार संग्रह
117 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान– (i) यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2018
121 (ii) सम्मिलित रक्षा सेवा परीक्षा, 2018
131 (iii) संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल सहायक कमाण्डेंट परीक्षा , 2018
141 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
143 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
146 ऐच्छिक विषय : वाणिज्य–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2018
161 उच्च श्रेणी तर्कक्षमता–जी.आई.सी. अधिकारी परीक्षा, 2018
166 गणितीय अभियोग्यता–आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2018
171 क्या आप जानते हैं ?
172 अपना ज्ञान बढ़ाइए
173 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध–भारतीय दर्शन के आलोक में उपभोक्तावाद
175 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक– 477 का परिणाम
176 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक–190

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

परखो; परखना है जरूरी

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

"A true friend freely, advises justly, assists readily, adventures boldly, takes all patiently, defends courageously, and continues a friend unchangeably."

— William Penn

जीवन का कोई भी पड़ाव क्यों न हो, अकेले जीना दुःसह है. साथी सबको जरूरी है, किन्तु कुछ साथ जीवन को सँवारते हैं, तो कुछ बिगाड़ने वाले बन जाते हैं. ऐसे में सही साथी का चुनाव करना बेहद जरूरी है. सही साथी का चुनाव न कर पाने के कारण अथवा गलत सलाहकार व गलत मित्र मण्डली रखने वाले लोग, चाहे राजा-महाराजा ही क्यों न रहे हो, मारे गए. प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह जानना और समझना अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि सच्चा मित्र कौन है. मित्र और मित्रता को परखने की कसौटियाँ निम्नलिखित हो सकती है.

1. त्याग—जो साथी आपके हित के लिए अपनी इच्छाओं का त्याग कर पाता है, वही सच्चा साथी है. वह आपसे मिलना चाहता है, आपके साथ गपशप करना चाहता है, किन्तु वह यह जानता है कि इससे आपकी पढ़ाई बाधित होगी, आपका फोकस भंग होगा, आपका समय जाया होगा इसीलिए वह आपसे मिलने नहीं आता. दूर से ही शुभकामनाएं प्रेषित करता है. आपके हित के लिए अपनी इच्छाओं का त्याग करता है, वह आपका सच्चा साथी है. वह अपना हित भी आपके हित के लिए कुलीन कर दे, तो ऐसा मित्र जीवन स्तर को ऊँचा उठाएगा, वह मित्रता करने योग्य है. हाँ, सच्चा मित्र आपके लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सजग, सभान, प्रतिबद्ध रहता है. आपका अधैर्य व लोभ, सम्भव है उस मित्र की सद्भावना को पहचान न पाए और आप उसके प्रति शिकायतों से भर जाएं, किन्तु सत्य यही है कि वह मित्र समझदार है. आप उसके त्याग को परखो. वह आपका ध्यान बँटाना नहीं चाहता. वह आपका सुख नहीं आपकी सफलता देखना चाहता है. वह आपकी मेहनत की सिद्धि चाहता है. वह आपकी योग्यताओं को अधिक बढ़ाना चाहता है. इस हेतु वह अपनी इच्छाओं का त्याग भी करता है. हमारे ऐसे मित्र हमारे अभिभावक भी होते हैं, वे हमारे सच्चे साथी होते हैं. वे हमें सफल बनाने के लिए हमारी जरूरतें पूरी करते हैं, किन्तु हमें भटकन से बचाने के लिए हमारी निरर्थक इच्छाओं पर अंकुश भी लगाते हैं. हमें धन व समय का अपव्यय करने से रोकते हैं. हमारी जिंदगी को सही आकार देने में मदद करते हैं. वे अपनी इच्छाएँ भी हमारे हित के लिए त्यागते हैं. हमें उनके त्याग की परख करना आना चाहिए. अन्यथा हम उनके उदत्त भावों को नहीं समझ पाने के कारण कभी-कभी अपराध भी कर डालते हैं. उन्हीं को भला-बुरा सुना देते हैं, जो हमारे लिए अपना सुख त्यागते हैं. मित्र को परखने का पहला सूत्र है—त्याग और दूसरा सूत्र है—उदारता.

2. उदारता—वह आपका सच्चा साथी होता है, जो अपने स्वार्थों का त्याग कर सकता हो. आपकी जरूरतों की पूर्ति के लिए जो अपनी जरूरतों को छोड़ सकता है, निःसंदेह वह उदार है कंजूस नहीं. कई कंजूस प्रवृत्ति के लोग अपने रिश्तेदारों के प्रेम को व विश्वास को छोड़ सकते हैं, किन्तु अपने धन को नहीं. वे अपनी कंजूस प्रवृत्ति के कारण मित्र की जरूरतों को कभी पहचान ही नहीं पाते. अतः जो अनुदार है, जरूरत के समय पर सहयोग करने से कतराता है, अपनी बेहद कंजूसी के कारण आप पर जोंक बन कर चिपक जाता है, ऐसा व्यक्ति आपका मित्र नहीं हो सकता. ऐसे मित्र को दूर रखें. वह ज्यादा भरोसे योग्य नहीं हो सकता है, किन्तु यहाँ यह भी ध्यान रहे कि आपका मित्र अति खर्चालू भी न हो. धन का मूल्य जाने बिना अपनी सुख-सुविधाओं के लिए व्यर्थ व्यय करने वाला भी न हो. दुर्व्ययी व कंजूस प्रकृति दोनों ही अहितकारी हैं. समझदारी से खर्च करना, सही स्थान पर खर्च करना व दिखावे की लालसा को नियंत्रित कर सकने वाला होना सम्बन्धों को सुरक्षित रख पाएगा. कई लोग अपने मित्रों को ही भुनाते रहते हैं, वे आपके सच्चे सहयोगी व साथी नहीं हो सकते.

3. झूठ बोलने वाला न हो—सहयोगी या साथी वह अच्छा, जो हो सच्चा. जो बात-बात पर झूठ बोलता है, आपके लिए किसी और से बोलता है, तो निःसंदेह किसी और के लिए आपसे भी बोलता होगा, वह आपका सच्चा साथी नहीं हो सकता. उससे सावधान रहने की जरूरत है. ऐसे लोगों की एक पहचान यह भी है कि वे बात-बात पर कसम खाएंगे व कसम दिलाएंगे. वे कसमों पर भरोसा करते हैं, बोलने पर नहीं, वे अक्सर सच्चे नहीं होते. जो शपथ पर भरोसा करते हैं, वे शपथ लेकर तोड़े तो नहीं, किन्तु अक्सर ऐसा होता नहीं. बहुत लोग शपथ लेकर तोड़ते हैं और फिर उसके लिए कोई न कोई बहाना भी ढूँढ़ ही लेते हैं, ऐसे लोग आपका पूरा साथ नहीं निभाएंगे. जब तक वे आपको अपने अनुकूल पाएंगे तब तक ही सहयोगी रहेंगे, बाद में छोड़ देंगे. अतः परखो. उनको, जो चाहे आलोचक ही क्यों न हों, सच्चे हों तो साथ में रखने योग्य हैं अन्यथा झूठे लोगों से बच कर चलो. झूठी तारीफ चाहे कितनी ही मन को लुभाए, गुदगुदाए, सच्ची नहीं तो अच्छी नहीं. जो बहाने गढ़ने में तैयार हैं, माहिर हैं वे बहानेबाज खुद को चीट (Cheat) करते हैं, वे आपके सच्चे साथी नहीं हो सकते. अगर आप में भी ऐसी कोई खामी है तो तुरन्त चेतिए. आप खुद के साथ ईमानदार नहीं हैं, तो आपको जो मित्र मिलेंगे वे भी वैसे ही होंगे.

4. नैतिक, कर्तव्यनिष्ठ व शीलवान हो—जो गलत धंधों में लिप्त है, चोरी व झूठ से महल खड़े कर रहा है, वह तुम्हारा सच्चा हितैषी, सच्चा मित्र नहीं हो सकता. जो अपने स्वार्थ के लिए अन्यों को चूना लगाता है, वह किसी दिन आपको भी लगाएगा, अतः सावधान रहो. सच्चा मित्र वही हो सकता है जो नैतिक हो, अपने कर्तव्य-अकर्तव्य की समझ रखता हो, कोई देखे या न देखे, अपने शील व ईमान को हर हाल में जीता है. प्रलोभन के वशीभूत होकर खुद की जमीर बेचने को जो किसी शर्त पर तैयार न हो, वही साथ निभाने योग्य है. कहा भी गया है कि—"खुबसूरत चेहरा भी बूढ़ा हो जाता है, ताकतवर जिस्म भी एक दिन ढल जाता है, ओहदा और पद भी एक दिन खत्म हो जाता है, लेकिन एक अच्छा इंसान हमेशा अच्छा इंसान ही रहता है" सही मित्र की परख आपको होगी तो आप कभी धोखा नहीं खाओगे. यह परख आपमें भी तभी पैदा हो सकेगी, जब आप स्वयं इन कसौटियों पर खरे उतरोगे. अतः परखो, अन्यों को ही नहीं; स्वयं को भी. परखना जरूरी है. खुद की परीक्षा करो. खुद ही परीक्षक बनो और स्वयं को परिशुद्ध करो. आपका जीवन तब आसान और सुन्दर होता है, जब आपके सहयोगी योग्य और सच्चे हो, वे ऐसे तब होते हैं जब आप भी योग्य और सच्चे हों. सुज्ञेषु किं बहूना.

●●●